

## ‘स्कूल का महत्व’

### निबन्ध

\*\*\* — \* — \* — \* —>

**प्रस्तावना :-** जीवन को सफल बनाने के लिए स्कूल एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। हम स्कूल से ज्ञान प्राप्त करते हैं। स्कूल ज्ञान का भंडार होता है। स्कूल में बच्चे का शारीरिक और मानसिक विकास होता है। स्कूल में शिक्षा बालक को सभ्य बनाने हेतु तथा जीवन के संघर्षों से लड़ने के लिए दी जाती है। स्कूल में बच्चों अनुशासन, मित्र, सम्मानता तथा मेल मिलाप से परिचित होता है।

**विद्यालय का महत्व :-** शिक्षित व्याक्ति की तुलना में अशिक्षित व्याक्ति को अच्छा रोजगार नहीं मिल पाता है। और स्कूल में हर प्रकार के क्षेत्रों को सीखने के लिए अच्छी व्यवस्था होती है। संगीत, कला, खेल और नृत्य के भी अलग शिक्षक होते हैं। विद्यालय में पढ़ाई के साथ बालकों का संपूर्ण विकास होता है। विद्यार्थी के जीवन में उसके माता-पिता के बाद गुरु आते हैं जो उन्हें विद्यालय में ही मिलते हैं और विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करते हैं। विद्यार्थी जीवन के दिन, सभी के लिए कीमती तथा यादगार होते हैं। आजकल तो विद्यालयों में योग और खेलकूद पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

**स्कूल तथा शिक्षा का जीवन पर प्रभाव :-** शिक्षा प्राप्त करना सिर्फ नंबर बढ़ाना नहीं होता है, शिक्षा से मनुष्य के व्यक्तित्व को बढ़ावा जा सकता है। बच्चे जब 10 वीं तथा 12 वीं पास कर लेते हैं तो उन्हें अपने जीवन के सही व गलत निर्णय लेने की समझ आने लगती है।

देश के आने वाले भविष्य के लिए युवा इन्टी स्कूलों में तैयार हो रहे होते हैं। एक शिक्षित व्यक्ति अपने जीवन में मेहनत करके अच्छा रोजगार, अच्छा जीवन, नाम आदि को प्राप्त करने में सक्षम होता है। बच्चा नैतिक मूल्यों को घर से ज्यादा स्कूल में सीखता है। विद्यार्थियों के गुणों को विकसित करने के लिए विद्यालय में अनगिनत प्रतियोगिताएँ कराई जाती हैं।

**गरीबी एक बाधक।** शिकावट :- कई बच्चे हैं, जो अब भी गरीबी के कारण शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ हैं। परिवार बड़ा और उनकी जरूरतों के कारण कम उम्र से ही उन्हें रोजगार करना पड़ता है। बाल मजदूरी हमारे देश में एक गंभीर समस्या है। इसको दूर करने के लिए बच्चों को शिक्षित करना जरूरी है। इसके लिए सरकार निःशुल्क शिक्षा तथा जरूरतमंद छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करती है। परंतु, सरकार को ऐसे ही और कदम उठाने होंगे ताकि देश का हर बच्चा शिक्षित बन सके तथा देश में बेरोजगारी, गरीबी जैसी समस्याएँ समाप्त हो पायें। माता-पिता को भी अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए तथा माता-पिता को भी उतना ध्यान देना चाहिए जितना की विद्यालय तथा वहाँ पढ़ाने वाले शिक्षक देते हैं।

**उपसंहार / निष्कर्ष :-** विद्यालय जाकर बच्चा अपने कर्तव्यों को समझता है। वहाँ विद्यार्थी को पुस्तकों के ज्ञान के साथ-साथ जीवन के पहलुओं का ज्ञान भी होता है। एक अच्छा और खुलझा हुआ नागरिक बनने का सफर विद्यालय से ही शुरू होता है। यहाँ से शिक्षा पाकर विद्यार्थी अपने सपनों को पूरा करते हैं। विद्यार्थी जीवन, जिंदगी भर याद आता है, वो हँसते-खेलते मित्र, सम्माननीय अध्यापक और वो विद्यालय का प्रेम प्रणय।